INNOVARE JOURNAL OF EDUCATION

INNOVARE ACADEMIC SCIENCES
Knowledge to Innovation

Vol 3, Issue 3 , 2015 ISSN: 2347-5528

Research Article

THE COMPARATIVE STUDY OF THE EFFECT OF GENDER AND ANIXITY OVER EDUCATIONAL LEVELS OF GRADUATION AND POST GRADUATION

Anil Babu

असिस्टेंट प्राफेसर, सरस्वती शिक्षा महाविद्याल,मंदसौर, जिला–मंदसौर,458001.**Email:**-anil_mip@rediffmail.com anil_mip@rediffmail.com

Received: 2 June 2015, Revised and Accepted: 20 July 2015

ABSTRACT

प्रस्तुत शोध अध्ययन में मंदसौर शहर के दो महाविद्यालय के विद्यार्थियों के चिंता का लिंग व शिक्षा के प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन किया गया। शोध अध्ययन के लिए मंदसौर शहर के 80 (40 स्नातक स्तर के छात्र एवं छात्राएँ एवं 40 स्नातकोत्तर स्तर के छात्र एवं छात्राऐं) विद्यार्थियों को न्यादर्श के रूप में चयनित किया गया। प्रदत्तों के संकलन के लिए सिन्हा एवं सिन्हा द्वारा निर्मित चिंता परीक्षण मापनी को उपयोग किया गया। शोध परिणामों से प्राप्त हुआ कि स्नातक एवं स्नातकोत्तर स्तर पर छात्र एवं छात्राओं के चिंता का लिंग व शिक्षा के प्रभाव में स्तर में सार्थक अंतर है।
ज्ञमलूवतकेरू महाविद्यालयीन छात्र–छात्राएँ, चिंता।

Keywords: महाविद्यालयीन छात्र–छात्राएँ, चिंता।

प्रस्तावना

मानसिक रोग अथवा मानसिक विकृति के कई प्रकार है, जिनमें एक मुख्य प्रकार मनोस्नायुविकृति अर्थात् चिन्ता विकृति है। यह एक साधारण मानसिक रोग है जिसमें व्यक्ति समायोजित रहता है तथा अपनी जीविका का अर्जन करके अपनी आवश्यकताओं को पूरा करने में सक्षम होता है। उसे मानसिक चिकित्यालय में जाने की आवश्यकता नही होती हैं। रोगी को अपनी स्थिति की जानकारी रहती है। चिन्ता शब्द की उत्पत्ति लैटिन भाषा के शब्द ।दगपमजल से हुई है जिसका अर्थ है– ग्माचमतपमदबम व िअंतलपदह इसमदके इल नदबमतजंपद ंदक जीतमंजेण मनोविज्ञान में इस शब्द का सर्वप्रथम उपयोग में लाने का श्रेय फ्रॉयड को है। चिन्ता के सबंधं में फ्रॉयड का विचार था कि शारीरिक यौन तनावों के परिणामस्वरूप चिन्ता की उत्पत्ति होती है। लकिन वर्तमान समय की भागदौड़ भरी जिन्दगी में चिंता का स्तर दिनों दिन बढ़ता जा रहा है, कभी व्यवस्था को लेकर तो कभी वेशभूषा को लेकर, तो कभी दुर्घटना होने पर,कभी–कभी व्यक्ति असीमित महत्वाकांक्षाओं को लेकर। चिंता परिवार से संबंधित, मित्रों से संबंधित, पढ़ाई से संबंधित, कैरियर से संबंधित एवं रोजगार से संबंधित अनेक चिंताये व्यक्तियों को परेशानी में डालती है। चिंता का स्तर तब अधिक उच्च हो जाता है जब विद्यार्थी अपने कैरियर को लेकर स्नातक एवं स्नातकोत्तर स्तर पर अध्ययन कर रहा होता है। ऐसी स्थिति में विद्यार्थी अनंत दुःखों का सामना करता है, कुछ भावावेगों का शिकार हो सकता है तो कभी उसे घोर निराशा का सामना करना पड़ता है। ऐसी स्थिति में एक सामान्य व्यक्ति किसी कारणवश असामान्य की ओर अग्रसर होने लगता है। ऐसी स्थिति में विद्यार्थियों को व्यक्तिगत एवं शैक्षिक निर्देशन देकर उनको कामयावी की प्रत्येक सीढ़ी के लिए अग्रसर कर चिंतामुक्त कर सकते है

पूर्व शोध अध्ययन

म. ए. अंसारी,1972 अपने अध्ययन में पाया कि चिंता का कॉलेज एवं स्कूल के विद्यार्थियों में सार्थक अंतर सिद्व हुआ। अध्ययन में पाया की चिन्ता का स्तर लड़को की अपेक्षा लड़कियों में अधिक होता है।

जी़ पी. . ठाकुर,1970 में अपने अध्ययन में पाया कि चिन्ता एवं बुद्धि के ऋणात्मक सहसंबंध है जिन छात्रों में चिन्ता की मात्रा उच्च एवं निम्न होती है उन छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि का स्तर मध्यम होता है। चिन्ता का शैक्षिक उपलब्धि से घनिष्ट एवं धनात्मक सहसंबंध होता है।

अध्ययन के उद्देश्य

- स्नातक स्तर के छात्र एवं छात्राओं के चिंता के स्तर का अध्ययन करना।
- स्नातकोत्तर स्तर के छात्र एवं छात्राओं के चिंता के स्तर का अध्ययन करना।
- स्नातक और स्नातकोत्तर स्तर के छात्र एवं छात्राओं के चिंता के स्तर का अध्ययन करना।

अध्ययन की परिकल्पनाएँ

- स्नातक स्तर के छात्र एवं छात्राओं के चिंता के स्तर में कोई सार्थक अंतर नही है।
- स्नातकोत्तर स्तर के छात्र एवं छात्राओं के चिंता के स्तर में कोई सार्थक अंतर नही है।
- स्नातक एवं स्नातकोत्तर स्तर के छात्र और छात्राओं के चिंता के स्तर में कोई सार्थक अंतर नही है।

शोध विधि

प्रस्तुत शोध अध्ययन हेतु वर्णनात्मक अनुसंधान की सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

न्यादर्श

प्रस्तुत शोध अध्ययन में जनसंख्या के रूप में मंदसौर शहर के दो महाविद्यालयों के स्नातक स्तर के 20 छात्र एवं 20 छात्राऐं एवं स्नातकोत्तर स्तर के 20 छात्र एवं 20 छात्राओं का चयन किया गया। शोध में चिंता के प्रति कारको देखने हेतु जनसंख्या में से स्नातक व स्नातकोत्तर स्तर के कुल 80 विद्यार्थियों को न्यादर्श में रूप में चयनित किया गया। न्यादर्श चयन हेतु उद्देश्यपरक न्यादर्श चयनित विधि का प्रयोग किया गया। उपरोक्त सभी न्यादर्श विक्रमविश्वद्यालय उज्जैन म.प्र के नियमित तथा हिन्दी माध्यम के विद्यार्थी थे।

अध्ययन में प्रयुक्त उपकरण

प्रस्तुत शोध में ए.के.पी. सिन्हा तथा एल.एन.के.सिन्हा द्वारा निर्मित चिंता परीक्षण मापनी का प्रयोग किया गया है।

सांख्यिकीय प्रविधि

दोनो स्तरों के माध्यों कि तुलना करने के लिए स्वतत्र टी टेस्ट का उपयोग किया।

प्रदत्तों का विश्लेषण एव व्याख्या –

शून्य परिकल्पना 1– स्नातक स्तर के छात्र एवं छात्राओं के चिंता के स्तर का तुलनात्मक अध्ययन

तलिका 1

शिक्षा का स्तर	लिंग	N	M	SD	t-Value	Inference
	छात्र	20	32.10	2.18		
स्नातक	छात्राएँ	20	52.8	1.58	5.35	ʺ

उपरोक्त तालिका से पता चलता है कि स्नातक स्तर के छात्र एवं छात्राओं के चिंता के स्तर में सार्थक अंतर है। अतः प्रथम शून्य परिकल्पना ''स्नातक स्तर के छात्र एवं छात्राओं के चिंता के स्तर में कोई सार्थक अंतर नही है'' को अस्वीकार किया जाता है। अगर आप मानव समाज के प्रारम्भ से लेकर अब तक के विकास पर दृष्टिपात डाले तो हमे पता चलता है कि व्यक्ति का जीवन इतना जटिल कभी नही रहा, जितना वर्तमान में है। उच्चतर माध्यमिक शिक्षा के बाद छात्र जैसे–जैसे उच्च शिक्षा के सम्पर्क में आता है वह अनेक समस्याओं की जंजीरो में जकड़ा नजर आता है। उसमें अयोग्यता की भावना, संवेगात्मक तनाव आत्मकेन्द्रित तथा विच्छिन्न पारस्परिक सबंधं एवं दैनिक जीवन की कार्यो में अनके प्रकार की समस्याओं का सामना करना पड़ता हैं जबकि छात्र–छात्राएँ इस समय किशोरावस्था के नाजुक एवं तुफानी दौर के गुजर रहे होते हैं उनमें परिपक्वता एवं उचित निर्देशन अभाव के करण वे चिंताग्रस्त रहने लगते है जिस कारण उसके शैक्षिक स्तर में गिरावट देखी जा सकती है।

शून्य परिकल्पना 2–स्नातकोत्तर स्तर के छात्र एवं छात्राओं के चिंता के स्तर का तुलनात्मक अध्ययन

तलिका 2

शिक्षा का स्तर	लिंग	N	M	SD	t-Value	Inference
	छात्र	20	52.8	1.58		
स्नातकोत्तर	छात्राओं	20	23.80	3.09	6.68	〃

उपयुर्क्त तालिका से पता चलता है कि स्नातकोत्तर स्तर के छात्र एवं छात्राओं के चिंता के स्तर में सार्थक अंतर है। अतः द्वितीय शून्य परिकल्पना ''स्नातकोत्तर स्तर के छात्र एवं छात्राओं के चिंता के स्तर में कोई सार्थक अंतर नही है'' को अस्वीकार किया जाता है। स्नातकोत्तर स्तर पर छात्र–छात्राओं में काफी हद तक परिपक्वता विकसित हो जाती है। किन्तु यह समय विद्यार्थियों के कैरियर से जुड़ी अनके प्रकार की चिंताओं के द्वार खोलता है। इस स्तर पर चिंता छात्राओं की अपेक्षा छात्रों में ज्यादा देखी जाती है। इस स्तर पर छात्र–छात्राओं पर परिवार की जबावदेही के साथ–साथ उन्हे अपने भविष्य की चिंता की लकीरें उनके चहरे पर साफ–साफ नजर आती है।

शून्य परिकल्पना 3– स्नातक एवं स्नातकोत्तर स्तर के छात्र एवं छात्राओं के चिंता के स्तर का तुलनात्मक अध्ययन

तलिका 3

शिक्षा का स्तर	लिंग	N	M	SD	t-Value	Inference
स्नातक	छात्र	40	42.45	2.42		
स्नातकोत्तर	छात्राएँ	40	24.25	2.66	5.55	〃

उपरोक्त तालिका से ज्ञात होता है कि स्नातक एवं स्नातकोत्तर स्तर के छात्र एवं छात्राओं के चिंता के स्तर में सार्थक अंतर है। अतः तृतीय शून्य परिकल्पना ''स्नातक और स्नातकोत्तर स्तर के छात्र और छात्राओं के चिंता के स्तर में कोई सार्थक अंतर नही है'' को अस्वीकार किया जाता है। वर्तमान समय के बदलते माहौल में उच्च स्तर पर छात्र–छात्राओं को व्यावहारिक ज्ञान के बजाय किताबी ज्ञान पर ही ज्यादा फोकस किया जा रहा है। वर्तमान समय में संस्थान सीमित भूमिकाओं के लिए छात्र–छात्राओं को तैयार कर पा रहे है जिस कारण बढ़ती बेराजगारी, प्रतिद्वन्द्वता के माहौल में छात्र–छात्राएँ चिंताग्रस्त रहने के कारण उनके व्यक्तिगत विकास में कमी नजर आती है।

निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध से प्राप्त परिणामों की विवेचना के द्वारा यह निष्कर्ष निकलता हैं कि स्नातक एवं स्नातकोत्तर स्तर पर चिंता का लिंग व शिक्षा के प्रभाव का सार्थक अंतर है। जहाँ छात्र ग्रामीण परिवेश से निकलकर शहर की भागदौड़ भरी जिन्दगी का सामना करता है, वहीं पर उच्च शिक्षा के लिए महाविद्यालय में प्रवेश लेता है, जहाँ उसे नया वातावरण एवं नये दोस्तो का सामना करना पड़ता है। यदि वह नये वातावरण के साथ उचित समायोजन स्थापित कर लेता है तो वह विभिन्न प्रकार की समस्याओं का सामना कर क्रिएटिविटी, टीमवर्क, कम्युनिकेशन, लीडरशिप इत्यादि स्किल्ड विकसित कर लेता है। वहीं ठीक इसके विपरीत नये वातावरण के साथ समायोजन स्थापित नहीं होने पर उसके अंदर चिंता, द्वन्द्व, आत्महीनता, अपराधी प्रवत्ति का विकास होने लगता हैं। इस स्तर पर ऐसे छात्र एवं छात्राओं को सूचना प्रौद्योगिकी के इस नवीन युग में विभिन्न चुनौतियों पर खरा उतरने के उददे्श्य से स्नातक एवं स्नातकोत्तर स्तर पर शैक्षणिक कार्यक्रम राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर के निर्देशकों द्वारा विभिन्न वैज्ञानिक एवं मनोवैज्ञानिक एवं योग्य, प्रशिक्षित, अनुभवी तथा अपने विषय के विशेषज्ञ अध्यापकों के सानिध्य में विद्यार्थियों को समुचित मार्गदर्शन दिया जाये जिससे वे चिंता मुक्त हो सके।

संदर्भ

1. सिंह, अरूण कुमार.(2013).शिक्षा मनोाविज्ञान, पटनाः भारती भवन.
2. मंगल, अंशु.(2011).शैक्षिक अनुसंधान की विधियाँ एवं शैक्षिक सांख्यिकी, आगराः राधा प्रकाशन मन्दिर.
3. कपिल,एच.के.(1981).अनुसंधान विधिया, हर प्रसाद भार्गव पुस्तक प्रकाशन,आगरा.
4. ए.के.पी. सिन्हा तथा एल.एन.के.सिन्हा, चिंता परीक्षण मापनी, आगरा साइकॉलोजिकल सेल, आगरा.
5. कुमार,दिनेश. (2010).मनोरोगविज्ञान, मोतीलाल बनारसीदास,जवाहर नगर, दिल्ली.
6. Prima Vitasari, Vol. 3, No. 2; May(2010) A Research for Identifying Study Anxiety Sources among University Students.
7. Harris, H.L., and Coy, D.R. (2003). *Helping Students Cope with Tes Anxiety*. ERIC Counseling and Student Services Clearing House